4

पिथौरा

शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने सांझी काल के विषय में जाना। इस पाठ में हम पिथौरा लोककला सीखेंगे। पिथौरा राजस्थान एवं गुजरात की भील जातियों द्वारा की जाने वाली एक पूजा अनुष्ठान से सम्बन्धित लोककला है, जो घर की दीवारों पर चित्रित की जाती है।

यह भीलों की चित्र परम्परा के एक पूजा अनुष्ठान से सम्बन्धित भित्ति चित्रण है, जिसमें 'पिथौरा बापदेव' के नाम से चित्र उकेरे जाते हैं। मनौती पूर्ण होने पर घर की भीतरी दीवार पर वर्ष में एक बार चित्र बनाकर पिथौरा की पूजा की जाती है, इस समारोह में पूरा घर, परिवार और समाज इकट्ठा होता है।

पिथौरा भित्ति चित्र प्राय: पुरुष ही बनाते हैं, जिन्हे 'लिखन्दरा' कहा जाता है। पिथौरा लिखने का अधिकार 'लिखन्दरा' को ही दिया है, दूसरा व्यक्ति पिथौरा चित्र को नहीं बना सकता।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- पिथौरा कला को वर्णन कर सकेंगे;
- पिथौरा के भित्ति चित्र कला परम्परा का वर्णन कर सकेंगे;
- पिथौरा चित्रशैलियों में अंतर कर सकेंगे;
- पिथौरा चित्रकला बनाना सीख पायेंगे।

4.1 सामान्य परिचय

पिथौरा भीलों की एक सम्पूर्ण चित्र गाथा है, जिसमें पिथौरा कुँवर के साथ इंदीराजा, काजल राणी, धर्मीराजा, हिमाला बेन आदि की कथा चित्रित की जाती है और गाई जाती है। पिथौरा में सबसे अधिक घोड़े बनाये जाते हैं, जिनकी पूजा की जाती है। भीलों का विश्वास है कि उनके देवता घोड़ों के रूप में उतरते हैं, जो पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक तक जाते हैं और आते हैं।

टिप्पणियाँ

पिथौरा भित्ति चित्र में भील-भिलाला जीवन की हर गतिविधि को स्थान दिया जाता है। खेत जोतता किसान, गाय-बछड़ा, बंदर, कुँआ-बावड़ी, दही बिलौती स्त्री, पनिहारिन, भिश्ती, ताड़ वृक्ष, ताड़ी उतारता आदमी, ऊँट, राजा, दसमुंड्या, साँप, बिच्छू, शेर, सूर्य-चन्द्र, बरगद, खजूर, मधुमक्खी का छत्ता, छिनालई, दुकान, रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि अभिप्रायों का चित्रण किया जाता है।

पिथौरा चित्र बनाने में वनस्पति और मिट्टी के रंगों का उपयोग किया जाता है। काला रंग काजल से, हरा रंग बालोड़ के पत्तों से, सफेद खड़िया से, पीला हल्दी से, गेरूवा गेरू से, नीला नील से बनाये जाते हैं। आजकल नये रेडीमेड रंगों का भी प्रयोग किया जाता है।

पिथौरा बापजी भीलों के घर की पवित्र दीवार में विराजते हैं। भीलों का अटूट विश्वास है कि जहाँ पिथौरा कुँवर रहता है, वह घर-खेत धन-धान्य से भरा रहता है। घर में अदृश्य बुरी शक्तियों का भय नहीं रहता तथा घर में बीमारियाँ और बाहरी बाधाओं का प्रवेश नहीं होता। पिथौरा बापजी घर के रक्षक देवता हैं।

पिथौरा घर में नीचे का भाग धरती होता है और ऊपर का हिस्सा आसमान। आसमान में ही स्वर्ग के लिए भी जगह होती है। आसमान में देवता रहते हैं और नीचे धरती पर मनुष्य, प्रकृति, जीव-जन्तु, हवा-पानी रहते हैं। इसे जमी माता भी कहते हैं। जमी माता को चार खानों में बाँटकर दिखाया जाता है। चारों खानों में अलग-अलग रंग भरा जाता है, जो धरती के चार खण्ड-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण को दर्शाते हैं। देशी भाबर के घोड़े पिथौरा बापजी के घोड़ों के ठीक नीचे सफेद रंग से ही बनाये जाते हैं। देशी भाबर यानी ग्रामधणी देवता होते हैं, जिन पर गाँव की रक्षा का भार होता है। पिथौरा घर का रक्षक है और ग्रामधणी गाँव के रक्षक देवता हैं। ग्रामधणी के घोड़ों की लगाम भी हाली के हाथ में होती है। पिथौरा के घोड़ों के गले में 'घुघरमाल अथवा काठली' डाली जाती है।

4.2 पारम्परिक पिथौरा मोटिफ/अभिप्राय

विद्यार्थियो अब आप पारम्परिक पिथौरा का अभिप्राय समझेंगे।

पिथौरा बापजी : यह मुख्य देवता हैं, इसलिए उनके दो सफेद घोड़े आमने-सामने बनाये जाते हैं, बीच में लगाम पकड़े 'हाली' होता है, जिसे बंडी, पगड़ी और जूता पहनाया जाता है। दोनों घोड़ों को काठीयुक्त बनाया जाता है, उस पर सवार नहीं बनाये जाते हैं। इन घोड़ों को 'शोभावर' से सजाया जाता है 'शोभावर' घोड़े के आसपास रंगीन बिन्दुओं की कतारें होती हैं।

पिथौरा घर के दरवाजे के ऊपरी भाग में चाँद-सूरज, तारे बनाये जाते हैं। सूरज गोल आकृति में चकरी की तरह निकली किरणों के साथ बनाया जाता है। समीप में ही अर्धचन्द्र बनाया जाता है। सूर्य-चन्द्र के आसपास बिन्दियों के माध्यम से तारे बनाये जाते हैं।

राणी काजल : घोड़ी बछड़े सहित बनायी जाती है। इसे सिन्दूरी रंग से बनाया जाता है। इसे बायीं तरफ बिना काठी और सजावट के बनाया जाता है। राणी काजल की घोड़ी और बछड़ी मातृशक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

हाथरजा कुँवर : यह जंगल का देवता है। आदिवासी पेड़-पौधों, नदी-पहाड़, जंगल आदि में अपने देवी-देवताओं का वास मानते हैं, जो जंगल में उनकी रक्षा करता है।

बारामाथ्या : ऐसा जीव जिसके बारह माथे यानी सिर हों। पिथौरा के दायें कोने में प्राय: इसकी जगह होती है। चौड़े स्कन्ध पर पतली सींक से लकीरों की तरह बारह सिर बनाये जाते हैं। उसके हाथों में नाग या लाठी जैसी कोई चीज दे देते हैं। इसे प्राय: सफेद रंग से बनाया जाता है।

चित्र 4.1: परम्परिक पिथौरा अभिप्राय

मेघनी घोड़ी : यह स्वरूप अद्‌भुत होता है। उसके दो मुँह होते हैं, उसका रंग सफेद होता है। एक मुँह से वह खाती है, दूसरे से वह मेघ राजा से बात करती है और उसकी ओर देखती है, इसकी पीठ पर काठी नहीं होती। यह जल बरसाने वाली घोड़ी है।

शेर : शेर की आकृति प्राय: पिथौरा द्वार के ऊपर बनायी जाती है। कहीं एक या कहीं दो शेर बनाये जाते हैं।

हाथी : पिथौरा में **हाथी** बनाने का रिवाज वैभव का प्रतीक है। हाथी नीले या काले रंग से बनाया जाता है। हाथी का अंकन प्राय: पिथौरा द्वार के आस-पास किया जाता है। कहीं हाथी पर पालकी अथवा हौदा भी बनाया जाता है।

भील महिला : सिर पर घड़े लिये **भील महिलाओं** के चित्रण में भील वेषभूषा का ध्यान रखा जाता है। जिस रंग के कपड़े प्राय: भील स्त्रियाँ पहनती हैं, उन्हीं रंगों का प्रयोग लिखन्दरा करता है। ये पनिहारिनें देवताओं के लिये पानी लाने वाली होती हैं।

कुआँ, बावड़ी : पनिहारिनों के समीप ही पिथौरा में बावड़ी, कुएँ का अंकन होता है। कुँआ-बावड़ी के समीप साँप-बिच्छू, मेंढक, छिपकली, भिश्ती (कावड़िया) पानी भरने वाले का चित्रांकन

किया जाता है। भिश्ती के कंधे पर कावड़ होती है, उसे कावड़्या भी कहते हैं। भिश्ती सफेद रंग से बनाया जाता है।

वाँदरा : यानी बंदर पिथौरा में ये दायें कोने में ऊपर, चार-पाँच की संख्या में कतारबद्ध दिखाये जाते हैं। बंदर काले, सफेद और लाल रंग से बनाये जाते हैं।

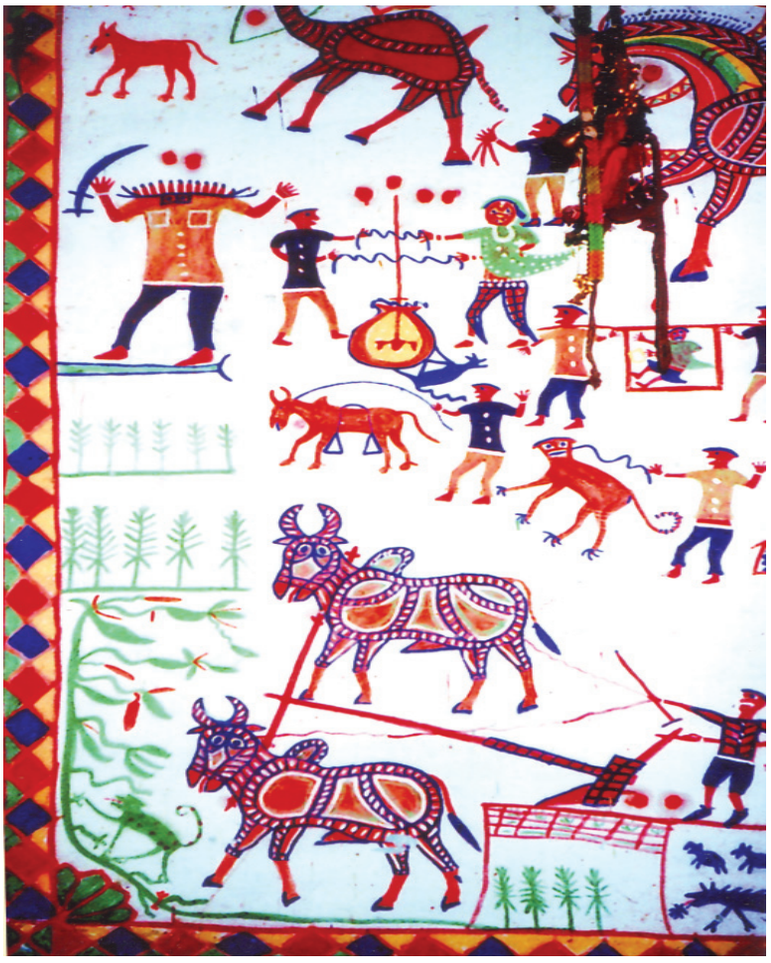

चित्र 4.2: पारम्परिक पिथौरा मोटिफ

तोता पोपट : ये प्रेम का प्रतीक है। पिथौरा में उसी की अभिव्यक्ति पिंजरे में पोपट की होती है। पिंजरा सफेद या काले रंग से बनाया जाता है और उसमें पोपट हरे रंग से दिखाते हैं। इसके साथ ही मोर और चिडिया अनिवार्य रूप से बनाये जाते हैं। मुर्गा-मुर्गी, बगुला, चील, कौआ आदि बनाये जाते हैं। मोर नीले रंग से बनाया जाता है, तितली, भौंरा आदि भी चित्रित होते हैं। गिद्ध, उल्लू पास-पास बनाये जाते हैं।

घोड़ा, हाथी, बैल, सिंह, बंदर पिथौरा में अनिवार्य रूप से बनाये जाते हैं। इनके साथ ही ऊँट, हिरण, बिल्ली, कुत्ता, गधा, उल्लू, खरगोश, रीछ, बकरी, गाय, भैंस, साँड, बारहसिंगा आदि बनाये जाते हैं। यह चित्रण मनुष्य से पशुओं के संबंधों को व्यक्त करता है। यह परस्पर निर्भरता का भी द्योतक है।

पिथौरा में चींटी से लेकर मधुमक्खी तक जगह पाती है। छिपकली, गिरगिट, मकड़ी, कछुआ, मछली, मगर आदि पिथौरा में कहीं न कहीं अपनी गतिविधियों के साथ दिखाई देते हैं।

ताड़ वृक्ष : प्रकृति की ऐसी अद्भुत देन है कि जिससे उतारी गई ताड़ी भीलों के लिए जीवन का आनंद बन गई है। इसलिए उसे भी पिथौरा में दिखाया जाता है। ताड़ और खजूर का पेड़ हरे या नीले रंग से बनाये जाते हैं।

चित्र 4.3: पारम्परिक पिथौरा मोटिफ/अभिप्राय

पिथौरा में बायीं तरफ किसान, हल-बैल बनाये जाते हैं, वह खेती का द्योतक है।

पिथौरा में दो शिकारी लकड़ी पर शेर (भण्डोरिया) की लाश को औधा टाँगे, जंगल से लाने का दृश्य, किसी गुहा चित्र का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

सुपड़ कन्या का अर्थ है वह स्त्री जिसके सूपड़े जैसे बहुत लम्बे कान हों। 'एक टांग्या' गाँव के अपंग लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रत्येक गाँव में गायों के प्रजनन के लिये एक साँड को छोड़ा जाता है, जिसे 'हाण्डया साँड' कहा जाता है। साँड की आकृति पिथौरा में धरती वाले हिस्से मे बनाई जाती है।

पिथौरा घर के बाहर भी कई चित्र देखने को मिलते हैं। पिथौरा के आसपास बची हुई दीवार पर नवसीखिया लिखन्दरा या अन्य शौकीन लोग चित्र बनाते हैं, जिनमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि के रेखांकन होते हैं।

4.3 पिथौरा चित्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- ड्राइंग बोर्ड
- ड्राइंग पिन
- पेंसिल
- रबर
- स्केल
- ड्राइंग शीट या मारकीन कपड़ा
- 1,3,7 नम्बर के गोल मुलायम ब्रश
- पोस्टर कलर
- प्लास्टिक का छोटा भाग
- कलर प्लेट

प्रयोग में आने वाली सामग्री

पिथौरा के मूल रंग लाल, सफेद, सिन्दूरी, काला, हरा, पीला और नीला हैं। ये सारे रंग देशज होते हैं। खासकर मिट्टी रंगों का प्रयोग किया जाता है। लिखन्दरा और उसके साथी पत्तों से बने दोनों अथवा कटोरियों में रंग तैयार करते हैं। बाँस की खपच्चियों पर रूई लपेटकर कूँची (ब्रश) बना लेते हैं। आजकल पोस्टर अथवा एक्रेलिक कलर और ब्रश का चलन हो गया है।

खड़िया से सफेद, काजल से काला, बालोड़ (सेम) के पत्तों से हरा, पेवड़ी से पीला, नील से नीला, गेरू से लाल-गेरूवा से प्राप्त किया जाता है। सिन्दूर को तेल या घी में घोला जाता है, शेष रंग पानी में घोले जाते हैं। रंग पक्के करने के लिए गोंद या फेवीकोल का पानी मिलाया जाता है। इससे दीवार पर बनाये गये चित्र बहुत दिनों तक चमकीले और सुरक्षित टिके रहते हैं।

4.4 पारम्परिक विधि

अब आप पिथौरा कला की पारम्परिक विधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

चित्रण के लिए पृष्ठभूमि तैयार करना

परम्परा से पिथौरा चित्रित करने का स्थान घर के भीतर की मध्य दीवार होती है। इस दीवार पर पिथौरा चित्र सुरक्षित और अखंडित रहता है। इस दीवार की लम्बाई 15–20 फीट और ऊँचाई 5–8 फीट होती है। इसे महिलाएँ गोबर, गेरू और पीली मिट्टी से पहले ही लीप-पोतकर तैयार रखती हैं।

पिथौरा से घर या चौखट चित्रित करना

पिथौरा की चौखट बनाने के पूर्व उसकी सही नाप-जोख कर ली जाती है। सही नाप-जोख से पिथौरा का घर आड़ा-टेढ़ा नहीं बनता। नाप-जोख के बाद सूत या सुतली से चारों ओर चूने अथवा गेरू से दोहरी लाइनें बना ली जाती हैं, जिसमें पिथौरा की बार्डर या मगजी बनायी जाती है। नीचे की बार्डर में एक खुला दरवाजा बनाया जाता है, जो घर का मुख्य द्वार होता है।

चौखट सफेद खड़िया से दो समान्तर रेखाओं को बनाया जाता है। लाल, पीले, नीले, सफेद आदि रंगों के त्रिभुजों अथवा पत्तों की बेल से उसे सजाया जाता है। चौखटें की लाइनें लाल, काली, नीली और सफेद हो सकती है। बार्डर की लाइनों के मध्य में काँटा, सकरपारा, सिंघाड़ा, फूल, पत्ते, लहरिया आदि से अलंकरण किया जाता है।

पिथौरा चित्र में बनाए जाने वाले विभिन्न चरित्रों का चित्रण

पिथौरा भित्ति चित्र की शुरुआत सबसे पहले हुक्का पीते गणेश के चित्र से होती है। उन्हें आह्वान करके चौखटे की बायीं ओर बार्डर से कुछ अन्दर पर हुक्का पीते बनाया जाता हैं। पिथौरा में हुक्का पीते गणेश को काले रंग से बनाया जाता है।

काठिया घोड़े की पीठ पर काठी कसी होती है, इसलिए वह 'काठिया घोड़ा' कहलाता है। उस पर सवार बैठाया जाता है। उसके आगे तीन-चार बन्दूकधारी आगे-आगे चलते हुए बनाये जाते हैं। काठी कसे घोड़े पर सवार 'काठिया कुँवर' कहलाता है। यह आमंत्रण के लिए निकला घोड़ा होता है, जो सभी देवी और देवताओं को पिथौरा समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रण देने जाता है।

प्रायोगिक अभ्यास 1

ड्राइंग शीट पर भील आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले पिथौरा चित्र का अनुसरण करते हुए चित्रांकन।

- सर्वप्रथम भील आदिवासियों द्वारा बनाए पिथौरा चित्र को ध्यान से देखें, उसमें बनी आकृतियों को पहचानें एवं चित्रांकन का प्रारूप समझें।

- अब इस मूल चित्र का ध्यान रखते हुए आप उसे किस प्रकार चित्रांकित करेंगे इसका विचार मन में करें एवं उन चरित्रों की बनावट को समझें।
- ड्राइंग शीट 14" × 20" माप का कागज लें। इस पर पेंसिल एवं स्केल की सहायता से चारों ओर एक इंच स्थान छोड़ते हुए लाइन खींचे। इस प्रकार 12" × 18" का एक आयताकार बन जाएगा।

चित्र 4.4

- अब इस आयताकार में कोई हल्का रंग, जैसे- पीला या भूरा रंग, ब्रश की सहायता से भर लें। रंग को कागज या कपड़े पर ऊपर से नीचे की ओर भरते हुए आगे बढ़े। प्रयास करें कि रंग सपाट और एकसार भरा जाए, उसमें धब्बे न बनें। अब इसे सूखने दें।
- रेखांकित की गई चौखट में कोई ज्यामितिक या फूल-पत्तियों की बेल से बार्डर बना लें।
- इस प्रकार आप कागज या कपड़े पर चित्रांकन करने हेतु पृष्ठभूमि तैयार कर सकते हैं।
- अब आपने पहले ही जो पृष्ठभूमि चित्रित कर रखी है उस पर पहले पिथौरा का घर या चौखट रेखांकित कर लें।

चित्र 4.5

- इसके उपरान्त इस चौखट के अन्दर जो चरित्र आप चित्रित करना चाहते हैं उनके स्थान और हल्के आकार पेंसिल से बनाएं।

चित्र 4.6

- अब प्रत्येक चरित्र की आकृति को स्पष्ट रूप से रंखांकित करें।
- इसके बाद तीन नम्बर के ब्रुश से प्रत्येक आकृति में अपनी पसंद के अनुसार सपाट रंग भरें।
- अब एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से विभिन्न आकृतियों के विवरण चित्रित करें तथा चमकदार रंगों की बुन्दकियां लगाकर उनकी सज्जा करें।
- चित्रित घोड़ों की आकृतियों को अन्य आकृतियों से बड़ा बनाएँ एवं उन्हें अधिक सजाएं।

चित्र 4.7

- अब आपका पिथौरा चित्र बनकर तैयार है।

प्रायोगिक अभ्यास 2

यह आपका दूसरा अभ्यास है। इस पिथौरा चित्र का विषय भील लोगों का दैनिक जीवन है।

- भील लोगों के जीवन से संबंधित पाँच मोटिफ/अभिप्राय चुनें। सर्वप्रथम पारम्परिक पिथौरा चित्र का ध्यान से अध्ययन करें और उन पांच अभिप्रायों को चुनें, जिन्हें आप चित्रित करना चाहते हैं।

चित्र 4.8

- अब आप पहले से तैयार कर रखी पृष्टभूमि पर पिथौरा के घर की चौखट अथवा मगजी का रेखांकन करें।

  सबसे पहले चौखटे को सफेद रंग से तूलिका के माध्यम से रंग भरें। चौखटे के चारों तरफ त्रिभुज आकृति तथा उसमें ऊपर तीन पत्तियों का कंगूरे बनाते हुए रंग भरें। चौखट के अंदर भी सफेद लाल तथा काले रंग की कोणीय रेखाओं से सजाया गया है।

- अब इस चौखट के बाहर चुने हुए पाँच चरित्रों को किस प्रकार संयोजित करना है उसकी कल्पना करें एवं हल्का रेखांकन करें।

चित्र 4.9

- चित्र संयोजन निर्धारित करने के बाद प्रत्येक चरित्र का स्पष्ट एवं सुघढ़ रेखांकन कर लें।
- अब ब्रुश की सहायता से चरित्रों में आरंभिक सपाट रंग भरें एवं चौखट में बने अलकरणों में भी रंग भरें।
- तदुपरान्त एक नम्बर के ब्रुश की सहायता से प्रत्येक चरित्र के विवरण चित्रित करें एवं चित्र को पूर्ण करें।
- रंग पूरी सफाई से भरें दाग-धब्बे न लगनें दें।

चित्र 4.10

- अब आपका पिथौरा चित्र तैयार है।

आपने क्या सीखा

पिथौरा चित्र →

- भीलों की पारम्परिक कला
- दीवारों पर बनती है
- पिथौरा बनाने वालों को लिखन्दर कहते हैं
- लिखन्दरों को हर घर में सम्मान से बुलाया जाता है
- इंदीराजा, काजल रानी, धर्मी मुख्य विषय हैं
- पिथौरा भित्ति चित्रों में घोड़े देव स्वरूप माने जाते हैं
- घर की बुरी शक्तियों और जीवों से बचाते हैं

पाठांत प्रश्न

1. दो लाइनों के माध्यम से पिथौरा घर बनाएँ।
2. चौखट की बायीं ओर नीचे काले रंग से हुक्का पीते गणेश बनायें।
3. काठिया घोड़ा बायें कोने के सिरे पर बनायें।
4. मध्य में सफेद रंग से दो घोड़ें बनाएं, जिनके मुँह आमने-सामने हों। बीच में एक आदमी की आकृति लगाम पकड़े हुए बनायें।
5. दरवाजे के ऊपर चाँद-सूरज, तारे बनायें।
6. इसके पश्चात् राणी काजल की घोड़ी, हाथरजा कुँवर का घोड़ा, मेघनी घोड़ी, शेष अन्य पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, सर्प-बिच्छू, पेड़-पौधे, पनिहारिन, खेत जोतता किसान, बन्दर आदि पारम्परिक आकृतियाँ बनाकर पिथौरा भित्ति चित्र को पूर्णता प्रदान करें।

शब्दकोश

पिथौरा	–	भील जनजाति से सम्बन्धित एक पारम्परिक अनुष्ठानिक भित्ति चित्र।
पिथौरा बापदेव	–	भील जनजाति का एक रक्षक देवता।
पिथौरा कुँवर	–	राजा का पुत्र होने के कारण उसे कुँवर (राजकुमार) की उपाधि से संबोधित किया गया।
लिखन्दरा	–	पिथौरा लिखने वाले व्यक्ति को परम्परा में 'लिखन्दरा' कहा जाता है।
पिथौरा घर	–	पिथौरा घर दीवार पर बनी चौखट होती है। उसी घर में पिथौरा और अन्य देवी-देवताओं का वास होता है।
बाहरी बलाएँ	–	भूत-प्रेत, बीमारियाँ, महामारी, पराशक्तियों का प्रकोप आदि
बालोड़	–	सेम की फली
पेवड़ी	–	पीला मिट्टी रंग।
देसी भाबर	–	ग्राम स्वामी देवता।
राणी काजल	–	वर्षा की देवी।
मेघनी घोड़ी	–	बादल देवता के नाम की घोड़ी।
राखी बहना घोड़ी	–	रक्षा बंधन पर्व पर राखी बाँधने वाली बहन के नाम की घोड़ी।

दिवाली बहना घोड़ी	–	दिवाली बहन नाम की घोड़ी।
इन्दी राजा	–	राजा इन्द्र
चितकबरया	–	जिसके शरीर पर काले, सफेद, लाल, छींटें हों।
नाप-जोख	–	माप अनुपात
किमची	–	बाँस की पतली पट्टी।
अनि	–	लोहे की तीर की नोक।
टिपका	–	बिन्दू।
पनिहारिन	–	सिर पर पानी का बर्तन लिए स्त्री
धारणी धरती	–	धरती।
कूँची	–	ब्रश।
दोना	–	पत्तों से बना प्याला।
हुक्का गणेश	–	हुक्का पीते गणेश।
काठिया घोड़ा	–	काठी यानी जीन कसा घोड़ा।
हाली	–	घोड़ा हाँकने वाला
शोभावर	–	अलंकरण, सजावट।
घोषणा पत्र	–	जो होने वाला है उसकी सूचना देना
जमी माता	–	धरती माता
दसमुंडया	–	दस सिर वाला
खड़िया	–	चुना
बारामाथ्या	–	बारह सिर वाला पुरुष।
कावड्या	–	भिश्ती, पानी भरने वाला
वाँदरा	–	बन्दर
सिंदूर	–	लाल सिंदूर
पोपट	–	तोता
बाहरा	–	उल्लू

टिप्पणियाँ

ताड़	–	एक प्रकार का वृक्ष
ताड़ी	–	ताड़ से ताड़ी निकाली जाती है। जो भीलों का प्रिय पेय है।
कण्डी	–	बाँस की टोकनी।
सूपड़ कन्या	–	जिस स्त्री के सूपड़े की तरह बड़े-बड़े कान हों।
एक टांग्या	–	लंगड़ा, एक टाँग वाला।
हाण्डया साँड	–	बैल जो प्रजनन के योग्य हो।
दारू	–	महुआ से बना पेय। जो भीलों के अनुष्ठान पूजा का एक अनिवार्य अंग है।
ढाँक	–	एक ताल वाद्य।
बड़वा	–	औझा-गुनिया जिसके अंग में देवता उतरते हैं।